100 aircraft due to lack of AJT. The value of the aircraft lost is around Rs. 7,000 crores. On the one hand, the allocated amount of Rs. 10,000 crores has not been utilised and on the other hand, the purchase of AJT has been delayed beyond comprehension. Will the Minister wake up?

### Need to Revive Praga Tools Ltd.

**श्री नंदी येल्लैया** (आन्ध्र प्रदेश): महोदय, प्रागा टूल्स टिमिटेड जिसे 1943 में स्थापित किया गया था और बाद में सरकार द्वारा रक्षा मंत्रालय से हिन्दुस्तान मशीन टूल्स को ट्रांसफर कर दिया गया था, रक्षा उत्पादन क्षेत्र में विदेशी मुद्रा की बचत करके राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान करता रहा है। इसे अन्तर्राष्ट्रीय मानक संगठन का 9001 अधिप्रमाणन प्राप्त है। इसे अब भी भारत अर्थमूवर्स, विमानन एजेंसियों, आर्डिनेंस फैक्ट्रियों आदि से और हिन्दुस्तान एयरोनाटिक्स से तथा वायुसेना से सुखाई 30 परियोजना और सारस, एलसीए विमानों के उपकरणों के विनिर्माण हेतु आर्डर मिल रहे हैं। यदि आजकल आयात किये जा रहे सुखोई-30 के उपकरणों का देश में विनिर्माण होगा तो हमारी विदेशी मुद्रा की बचत होगी और हमें संकटपूर्ण घड़ी में विदेशों का मुंह नहीं ताकना पड़ेगा। इस कम्पनी के कर्मचारियों को जुलाई 2001 से वेतन नहीं मिला है, न ही अब तक उन्हें भविष्यनिधि/राज्य बीमा योजना की 1200 लाख रुपए के साविधिक देयों का भुगतान किया गया है। उनके 750 परिवार भुखमरी के कगार पर हैं। उनको ये भुगतान मानवीय आधार पर अविलम्ब जारी करें और विलमोरिया समिति की सिफारिश के अनुसार प्रागा टूल्स को फिर से चालू करने की योजना को शीघ्र मंजूरी दें। इस उद्यम की टेक्नालाजी को चरणबद्ध रूप से उन्नत करने की संभावना पर भी विचार किया जाए।

### Need for Welfare Programme for Uttaranchal Women on Lines of North-East States

**श्री मनोहर कान्त ध्यानी** (उत्तरांचल) : महोदय, मेरा विशेष उल्लेख पूर्वोत्तर प्रदेशों की भांति उत्तरांचल में महिलाओं के लिए विकास के विशेष कार्यक्रम प्रारंभ करने की आवश्यकता के बारे में है।

महोदय, वर्तमान सरकार बधाई की पात्र है कि उसने पूर्वोत्तर के प्रदेशों के लिए कामकाजी घरेलू महिलाओं के लिए व्यक्तिगत और सामूहिक रूप की अनेक ऐसी योजनाएं प्रारम्भ की हैं जिससे वे व्यक्तिगत और सामूहिक प्रयास कर अपने परिवार के आर्थिक उत्थान में योगदान कर समाज को सबल बनाने की दिशा में सहयोग प्रदान कर सकती हैं और इससे उस क्षेत्र की आर्थिक दशा को भी गति प्रदान होने की भी संभावना है। महोदय, उत्तरांचल जो मुख्य रूप से एक पर्वतीय राज्य है और इसका अधिकतर भाग पर्वतीय है और मैदानी क्षेत्रों की तरह श्रम के बारे में भी मान्यतायें भिन्न हैं। जहां मैदानी क्षेत्रों में कार्य के आधार पर जातियां हैं और काम का बोझ मुख्य रूप से पुरुष वर्ग पर रहता है वहीं उत्तरांचल में इसके विपरीत स्थिति है। वहां काम के आधार वाली जातियां नहीं हैं और लगभग सभी लोग अपना काम स्वयं करते हैं। इसके कारण काम का अधिक बोझा चाहे परिवार का संचालन हो, चाहे खेती-बाड़ी की देखभाल हो, चाहे पशुधन का रक्षण हो, सभी कामों का बोझ वहां की मातृ शक्ति एक लम्बे समय से ढो रही है और यह एक बड़ा अंतर मैदानी और पर्वतीय क्षेत्रों का है। पूर्वोत्तर के पर्वतीय प्रदेशों में भी